उपसंहार —

स्वतंत्रता के बाद समाज में चेतना भरने का काम हिंदी के उपन्यासकारों ने किया है । सामान्यत: हिंदी उपन्यास प्रगतिशील और यथार्थवादी रहा है । हिंदी उपन्यासकारों की नयी पीढी स्वतंत्रता के बाद की चेतना को ग्रहण करके लिखने में प्रवृत्त हुअी । जनता की ज्वलंत समस्याओं का, उसकी परिस्थितियों तथा प्रतिक्रियाओं का सूक्ष्म निरिक्षण एवं परीक्षण करके, उपन्यासकारों ने जनता के सुख-दु:ख, आशा, आकांक्षाओं को वाणी देने का प्रयास किया है । साठोत्तरी कालखंड में हिंदी उपन्यासों में प्रगतिवादी दृष्टिकोन को अपनाकर जनसामान्य के उत्थान को मुखरता देने का प्रभावी काम किया । पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के साठोत्तर काल के उल्लेखनीय उपन्यासकार तथा कहानीकार के रुप में यात्रीजी सर्वश्रुत हैं । उनकी साहित्ययात्रा सन 1960 के बाद शुरु हुअी ।

यात्रीजी की जीवन-यात्रा प्रतिकुलता के पडाओं पर से गुजरती रही । प्रतिकूलता में शिक्षा-दीक्षा हासिल की । कॉलेज के दिनों में पढ़े साहित्य का प्रभाव उनपर गहरा हुआ उन्होंने मध्यवर्गीय व्यक्तियों के सुख-दु:खों को अपने साहित्य के माध्यम से वाणी देने का काम किया । गत 22 सालों से यात्रीजीने साहित्यक्षेत्र में अपना योगदान दिया है । आपने लगभग 200 कहानियाँ और चौबीस के आसपास महत्त्वपूर्ण उपन्यासों का सृजन करने के साथ-साथ उन्होंने एक व्यंग्यसंग्रह, एक संस्मरण और दो किताबों का संपादन भी किया है ।

यात्री ने अपने उपन्यास में मध्यवर्ग के समाज की समस्याएँ, उनकी आशा-निराशाएँ, उनके हर्ष-खेद सहित उनकी व्यथाएँ आदि को वाणी देने का प्रयत्न किाय है यात्री के 'लौटते हुए' उपन्यास को छोडकर सभी उपन्यास आकार में लघु हैं फिर भी यात्रीजी के उपन्यास एक मँजे हुए उपन्यासकार के समान है । अपने उपन्यासों में यात्रीजी ने कम-से-कम पात्रों के सहारे उपन्यास की कथावस्तु को सफल बनाया हैं । यात्रीजी के 'दराजों में बंद दस्तावेज' और 'बीच की दरार' तथा 'लौटते हुए' इन उपन्यासों को समस्याप्रधान उपन्यास कहा जा सकता है, तो सुबह की तलाश उनका ध्येयवाद से प्रेरित लिखा गया उपन्यास है ।

यात्रीजी के साहित्य के प्रेरणास्थल उपेंन्द्रनाथ अश्क तथा कमलेश्वर है । उनके उपन्यास में स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोन उभर उठा है और उन्होंने मार्क्सवादी दृष्टिकोन के मानवीय पक्ष को स्वीकार किया है । मूल लेखकीय संवेदना को महत्त्व देने के कारण उनका टेकनिक की तरफ से ध्यान हट गया है । वे योजना बनाकर लेखन करने के पक्ष में नहीं लगते है । समाज में जो व्यथा, उपेक्षा, शोषण का चित्र उन्हे दिखाई देता है । उनको ही उन्होंने अपने उपन्यास का विषय बनाया है । प्रेमचंदजी की भाँति मानवी दु:खों के मूल को खोजने का प्रयास किया है । उनकी आलोच्च उपन्यासों में मानवी जीवन में खलबली मचानेवाली समस्याओं को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न हुआ है ।

1969 में लिखा हुआ 'दराजों में बंद दस्तावेज' यह यात्रीजी का पहला उपन्यास है, जिसमें नारी-शोषण की समस्या को उजागर करने का प्रयत्न यात्रीजी करते हैं । साठोत्तर काल में समाज के विभिन्न वर्गों ने अपने शोषण का डटकर विरोध करना शुरु किया । नारी ने भी समान अधिकार को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने का तरीका अपनाया । साठोत्तर काल में भारतीय नारी को अपनी अस्मिता की पहचान होने लगी । वह अपने विचार स्वतंत्र रुप में समाज के संमुख रखने की कोशिश करने लगी परंतु नारी शोषण का सिलसिला वैसे ही जारी रहा है । नारी के जीवन में विवाह, दहेज, वैधव्य, अनमेल विवाह, कॉलगर्ल, बलात्कार, शोषण आदि समस्याएँ आज भी भयावह रुपमें उभर रही है । ज्यादातर संयुक्त परिवार में नारी शोषण होने लगा हैं । यात्रीजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी-शोषण के विविध आयामों को नजरअंदाज करके नारी की व्यथा के प्रति संवेदनशील भाव से चिंतन किया है । 'दराजों में बंद दस्तावेज' की नायिका 'करुणा,' 'बीच की दरार' की 'नीना' तथा 'सुबह की तलाश' की 'बीना' इन सब पात्रों के जरीये नारी-शोषण के विविध आयामों से पाठकों की पहचान कराने का कार्य यात्रीजी करते है । अर्थात इन आलोच्च उपन्यासों में यात्रीजी नारी जीवन के पक्षधर लगते हैं ।

'दराजों में बंद दस्तावेज' की नायिका करुणा को मजबूरी से कॉलगर्ल बनना पडता है । माँ-बाप के गुजर जाने के बाद उसका पालन-पोष्ण दूर की मौसी करती है । मौसी 'करुणा' का शारीरिक शोषण करती है । करुणा आम लड़कियों की तरह गृहस्थी बसाना चाहती है, मगर मौसी के शरीर को चलाने के लिए मौसी ने तैयार किये रास्ते पर चलने पर मजबूर हो जाती है । करुणा को मालुम है कि इस घिनौनी

जिंदगी से मुक्त होना संभव नहीं है । 'दराजों में बंद दस्तावेज' की नायिका करुणा के जिस्म का शोषण एक नारी ही करती है । अपने स्वार्थ के हेतु वह उसे 'कॉलगर्ल' का व्यवसाय करने को बाध्य करती है । एक बेसहारा युवति पूंजीपतियों की वासना का शिकार बनती है अपनी मौसी के कारण करुणा यहाँ समाज व्यवस्था की शिकार बनती है परंतु सच्चाई, ईमानदारी का साथ न छोडकर अपने ऊपर प्रेम करनेवाले एक भोले प्रेमी अध्यापक के सामने सच्चाई का उद्घाटन करके उसे सत्यपथ पर से गुजरने को सूचित करती है । वह अपने स्वार्थ के लिए सच्चे प्रेमी अध्यापक को धोखा देना नहीं चाहती । उस अध्यापक के साथ विवाह करके गृहगिरस्थी बसाना न चाहकर वह यथातस्थिती रहना पसंद करती है । करुणा जैसी कई लड़कियाँ को जबरदस्ती से या उनके मज़बूरी का फायदा उठाकर 'कॉलगर्ल' जैसे घिनौने व्यवसाय में लाया जाता है और उनका शारीरिक तथा मानसिक शोषण किया जाता है । यात्रीजी ने अपनी तरफ से कोई भी टिप्पनी न करते हुए एक कड़वे सच को आईने की तरह पाठकों के सामने पेश किया हैं । नारी शोषण के इस भयंकर रुप को मनोविश्लेषणात्मक रीति से पेश किया है ।

दुनिया में कोई भी लड़की अपनी मर्जी से कॉलगर्ल नहीं बनती बल्कि किसी भयानक और गंभीर मज़बूरी के कारण ही उसे ऐसा गंदा काम करना पड़ता है । यात्रीजी ने करुणा की मज़बूरी तथा मानसिकता को अभिव्यक्ति देने का यथार्थ प्रयास किया है । यहाँ 'करुणा' के कॉलगर्ल बनने के पीछे उसकी असहायता का फायदा उठानेवाली मौसी है । जाहिर है कि एक नारी ही नारी का किस तरह से शोषण कर सकती है, इसकी सबसे बड़ी मिसाल मौसी है ।

यात्रीजी ने 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास के माध्यम से करुणा के जीवन की जटीलता और विसंगतियों का चित्रण करके हमारे समाज में स्थित सामाजिक विकृतियों को उभारा है । इस उपन्यास में करुणा और परेश की प्रेमकहानी चित्रित करना इतना ही यात्रीजी का उद्देश्य नहीं है बल्कि समाज में 'करुणा' जैसी कई लड़किया है, जो हालात और समाज की विकृतियों का शिकार हो चुकी है । स्वतंत्रता के बाद नारी पढ़-लिखकर अपने विचारों का प्रदर्शन और समर्थन भी करने लगी । पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी नारियों का परीवारिक स्तर पर शारीरिक और मानसिक शोषण होता रहा । पुरुषप्रधान संस्कृति में भी नारियों का शोषण करनेवाली में नारी ही अहंम् भूमिका निभाती रही ।

परीवारिक स्तर पर पतियो द्‌वारा होनेवाले शोषण की शिकार बननेवाली नारियों की संख्या आज अधिक है, इसका अच्छा उदाहरण 'बीच की दरार' की नीना है । वह पढ़ी-लिखी होने पर भी उसका जीवन शोषण से नर्क हो जाता है । यात्रीजी ने 'बीच की दरार' उपन्यास की नायिका 'नीना' के जरीये पती के शोषण की शिकार हुई नारी को पाठको के सामने प्रस्तुत किया है ।

नीना का प्रख्यात अभिनेत्री होने पर भी वैधव्य की पीड़ा से उभरने के लिए और समाज व्यवस्था में स्थित गंदे गिध्दों की दृष्टि से बचने के लिए विधवा पुनर्विवाह करना उचित एवं न्याय लगता है परंतु उसके पतिद्वारा पुरुषप्रधान संस्कृति की आड में जो घिनौना शोषण हो रहा है यह पीडाजन्य लगता है । पुरुष नारी के रुप-सौंदर्य को चाहता है, उसके शरीर को भोग लेता है पंरतु उसी को केवल मादा बनाकर रखना ही पसंद करता है । वह गृह-गृहस्थी को संभाले, बच्चों की पैदास करके उनकी परवरिश करे, घर की चार दीवारों में बंद रहे, बाह्य विश्व में उनका आना-जाना शुरु न हो जाये, उसकी योग्यता न उभरती रहे, वह पूर्ण रुपमें अपने कब्जे में रहे, उसको उसके स्वतंत्र आस्तित्त्व का बोध न हो जाए इस प्रकार की धारणा पुरुषों की होने के कारण योग्यताप्राप्त नारी की जिंदमी कुंठीत बनती है और घुटनशील परिवेश में वह ऊबलकर मनोरुग्ण भी बन जाती है । 'बीच की दरार' की नीना इसका अच्छा उदाहरण है जो विधवा पुनर्विवाह के बाद अपने प्रख्यात पति, फिल्म निर्देशक नागपाल के सान्निध्य में घुटन महसूस करती है । एक प्रख्यात अभिनेत्री होने पर भी नागपाल उसे फिल्मों में काम करने पर प्रतिबंध लगाकर केवल उसे मादा बनाकर घर में रहने को बाध्य करता है । इससे नीना की पूरी जिंदगी सोने के पिंजड़े में बैठी मैना की भांति होती है । पति के दबाव के कारण, उसकी भोग की अति के कारण उसका पूरा जीवन कुंठाग्रस्त बनता है । अपने ही घर में यह नारी शोषण आज के समाज की एक भयावह समस्या है जिसे नीना ढो रही है । उसके प्रथम पति विठोबाने भी उसका दयनीय शोषण किया था ।

'बीच की दरार' एक ऐसा उपन्यास है जिसमें यात्रीजी ने फिल्मी दुनियाँ की चकाचौंध की रोशनी में दबे हुए यातनामयी दु:ख को खोजने का अच्छा प्रयास किया है । ऊपरी तौर पर से सुंदर दिखाई देनेवाला कलाकारों का जीवन कितना दु:खभरा होता है, इसका सफल चित्रण किया है । आज की नारी पढ़ी-लिखी और मॉडर्न हो चुकी है, फिर भी उसे किसी-न-किसी मज़बूरी के कारण शोषण का शिकार बनना पड़ता है, जिससे मुक्ति पाना उनके लिए बहुत ही मुश्किल है । इसी तथ्य का चित्रण यात्रीने 'बीच की दरार' में किया है ।

यात्रीजी का उपन्यास 'सुबह की तलाश'(1994) में अपने जीवन के मंतव्य की तलाश

करनेवाले एक 'सतीश' नामक युवक की पीड़ा का चित्रण है। बेकारी की पीड़ा से त्रस्त इस युवक को कई जगह नौकरियाँ तो मिलती हैं, परंतु वहाँ के कटु अनुभव उसे फिर बेकार बनने को बाध्य करते हैं। वह एक भूला-भटका यात्री है, जिसे जीवन की सही दिशा नहीं मिलती है। काफी देर के बाद भटकान के ऊपरांत उसे अपने जीवन की 'सुबह की तलाश' होती है। मतिमंदो की सेवा करने के रुप में। वहाँ उसे सही आंनद मिलता है जिसे वह जीवन का सही रास्ता मानता हैं।

यात्रीने इस उपन्यास में आज के युवको की मनोदशा का हु-ब-हु चित्रण किया है। उपन्यास पढ़ते समय पाठकों के मन में कथावस्तु के प्रति अपने पन का एहसास होता है। उपन्यास का नायक अपने जीवन में कामयाबी हासिल करने के लिए कड़ा संघर्ष करके आपने अखंड परिश्रम से अपने उज्वल भविष्य के 'सुबह की तलाश' करता है। यात्रीजीने इस उपन्यास में दहेज की समस्या को भी उजागर करके नारी जीवन की दयनीयता पर प्रकाश डाला है। इस उपन्यास के नायक 'सतीश' का उच्चशिक्षित होने के बावजूद भी बेकारी के कारण उसकी मानसिक स्थिति का विवरण के साथ चित्रण प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास नौकरी के लिए दर-दर भटकनेवाले युवक की कहानी है मगर यात्रीजी ने 'बेकारी' की समस्या की दाहकता को अच्छी तरह से स्पष्ट नहीं किया है इसीलिए इस उपन्यास का अध्ययन करने पर लगता है कि ध्येयवाद या बेकारी की समस्या इन दो नावों पर संवार हुए लेखक का मन दोंनो में से किसी भी एक विषयवस्तू को पूरी तरह न्याय नहीं दे सका।

यात्रीजी के उपन्यासों की कथावस्तु में गौण कथाओं की बुनावट अधिक न होने के कारण सामान्य पाठक भी इसे ठीक ढंग से समझ सकता है। कथावस्तु में घटनाएँ सुसंगत है और कथावस्तु को आगे बढाने में सक्षम है। उनके आलोच्च उपन्यासों की विषयवस्तु से यह पता चलता है कि लेखक के विचार सामाजिक प्रतिबध्दता के निर्वाहक है। उपन्यासों में कहीं पर अश्लीलता नहीं हैं। यथार्थ के नाम पर अवांछित प्रसंगो का नमक-मिर्च लगाकर वर्णन नहीं किया है। इससे पता चलता है कि लेखक की दृष्टि संस्कारशील है और वे अपने पाठको को भी संस्कारशीलता के सबक देना चाहते है। उनके 'दराजो में बंद दस्तावेज' इस समस्याप्रधान उपन्यास में केवल तीन पात्र ही अंहम भूमिका निभाते है, जिसमें उपन्यास की नायिका 'करुणा,' नायक 'परेश' और 'मौसी' इन तीन पात्रों के जरीये यात्री कॉलगर्ल की समस्या को उजागर करने का प्रयास करते है। उपन्यास की नायिका तथा नायक पढे-लिखे है।

यात्रीजी के आलोच्च उपन्यासों में पात्रों की संख्या बहुत कम है परंतु कम पात्रों की सहायता से उन्होंने अपने मंतव्य को अत्यंतिक सफलता के साथ प्रस्तुत किया है । यात्रीजी के पात्र परिस्थिति के शिकार बनकर चाहे जिस व्यवसाय में पडने पर भी संयम, सात्विकता, प्रामाणिकता वैचारिक सत्य पक्ष को नहीं छोडते । 'करुणा' इसका अच्छा उदाहरण है जो परेश जैसे अध्यापक को उसके चाहने पर भी नकारती है । करुणा को आम लड़कियों की तरह जीवन जीने की तमन्ना है । परेश जैसा नेक अध्यापक उसके जीवन में आता है, जिसे करुणा की पिछली जिंदगी के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है । करुणा चाहती तो परेश से शादी करके अपने सपनों को सच में बदल सकती थी मगर परेश जैसे भोले, निरीह सच्चे प्रेमी को फँसाना उसके लिए बड़ी कठीण बात थी क्योंकि वह परेश को मन-ही-मन में चाहने लगी है । यात्रीने 'करुणा' का चित्रण करते समय बड़े संयम से उसे चित्रित किया है । 'कॉलगर्ल' होते हुए भी उसके आचार और विचारों के प्रति पाठकों के मन में आदरभाव को निर्माण करने में यात्रीजी सफल हुए है । 'करुणा' स्वंतत्र विचारों की है । उसका अजीब-सा खोयापन और परेश को मुंहतोड बोलना पाठक समझ जाते है कि करुणा । आज जो भी है उसमें उसका कोई क़सुर नहीं है । संयम, सात्विकता, प्रामाणिता, वैचारिकता आदि गुणों से निर्माण किया हुआ यात्रीजी का करुणा यह पात्र पाठकों की सहानुभूति प्राप्त कर जाता है ।

'दराजों में बंद-दस्तावेज' का नायक अत्यंत भावूक है । इस उपन्यास में वास्तविकता का पक्षधर है । वह एक भोला-भाला प्रेमी है, जो केवल प्रेम ही चाहता है, पिछला इतिहास नहीं । वह करुणा के प्रति अपने मन में उभरी प्रेम की भावनाओं को वाणी नहीं देना चाहता ताकि प्रेम ही चाहता है, पिछला इतिहास नहीं । वह करुणा के प्रति अपने मन में उभरी प्रेम की भावनाओं को वाणी नहीं देना चाहता ताकि प्रेम को वाणीद्वारा मुखरित करना वह उचित नहीं समझता । उसके स्त्री विषयक विचार अत्यंत प्रगतिशील है । परेश भारतीय समाज में स्थित नर-नारी भेदाभेद को नहीं मानता बल्कि स्त्री को पुरुष की बराबरी का मानता है । 'करुणा' जब खुद परेश के चरणों में बिछ जाना चाहती है, लेकिन परेश को केवल शारीरिक सुखों के उपभोग के बजाय सच्चा प्रेम पसंद है इसीलिए

करुणा के साथ परेश अच्छे प्रेमी की तरह पेश आता है । यात्रीजी ने इस पात्र के जरिये एक आदर्श चरित्र उभरने का प्रयास किया है ।

'दराजों में बंद दस्तावेज' में नारी की असहाय्यता का फायदा उठाके उन्हें कॉलगर्ल तथा वेश्या बनानेवाली कई नारियाँ आज भी समाज में स्थित हैं, उसके प्रतिनिधित्त्व के रुप में यात्रीजी ने मौसी के चरित्र को उभारा है । आज नारी ही नारी का जानलेवा शोषण करती है, यह बात यहाँ मौसी द्वारा स्पष्ट होती है । 'मौसी' जैसी कई नारियाँ छोटी-छोटी बच्चियों को पाल पोसकर जवानी में वेश्या बनाती है और स्वयं उनके पैसों से चैन की ज़िंदगी गुजारती है । ऐसी नारियों का प्रतीक मौसी के रुप में चित्रित करके यात्रीने समाज की वास्तविकता का कौशल से चित्रण किया है । पुरुषप्रधान संस्कृति में पुरुषोंद्वारा नारी का शोषण किया जाता है लेकिन नारी भी नारी का शोषण करने में काफ़ी माहिर है, 'दराज़ों में बंद दस्तावेज' की मौसी इसका अच्छा उदाहरण है ।

नारी शोषण एक पुरानी और परंपरागत लेकिन महत्त्वपूर्ण समस्या है । यात्रीजी ने नारी जीवन के अलग-अलग पहलुओं को उजागर करने के लिए वास्तव संसार में स्थित चरित्रों को उपन्यास की नायिका बनाया और उनकी पीड़ा को पाठकों के संमुख प्रस्तुत किया है । 'बीच की दरार' की नायिका नीना पुरुषप्रधान संस्कृति के शोषण की शिकार है । वह अपने पति द्वारा शोषण की शिकार हो गयी है । यात्री ने नीना की जिंदगी का चित्रण पूर्व दीप्ति शैली से किया है । नीना एक समय की प्रसिद्ध सिने-अभिनेत्री है, जिसका पुनर्विवाह अत्यंत ख्यातनाम निर्देशक नागपाल से हुआ है । नागपाल के साथ शादी होने से पहले उसकी शादी विठोबा से हुई थी लेकिन विठोबा ने भी नीना का शोषण ही किया था । नीना जब फिल्मी दुनियाँ में सफल होने लगी तब विठोबा उस पर और अधिक अन्याय, अत्याचार करने लगा । विठोबा से नीना को एक बच्ची हुई थी जो किसी बिमारी से तुरंत मर गयी और किसी दंगे फसाद में विठोबा की भी मौत हो गयी । नीना की यह दु:ख भरी दास्तान को चित्रित करते समय यात्रीजी ने फिल्मी दुनिया के चकाचौंध में दफन हुई कई अंधेरी जिंदगीयों को नीना के जरीये उभारा है । फिल्मी दुनिया की प्रदर्शन प्रिय प्रवृत्ति की तरफ ध्यान न देते हुए उनके भीतरी जीवन की व्यथा को समर्थ रुप में चित्रित किया है ।

आज नीना जैसी कई नारियों का शोषण हो रहा है किंतु वे सब अपनी किसी-न-किसी मज़बूरी के कारण होनेवाले अन्याय, अत्याचार से मुक्त होने की कोशिश करती है, फिरभी वे इसमें असफल होती है यहीं बात से.रा.यात्रीजी 'बीच की दरार' उपन्यास की नायिका नीना के माध्यम से स्पष्ट करना चाहते है । आलोच्च उपन्यासों के नारी पात्र शोषण की एक दु:खद गाथा लगते हैं ।

'बीच की दरार' का नायक 'नागपाल' नकारात्मक रुप में चित्रित किया गया है । वह समाज के सामने एक तस्वीर निर्माण करता है परंतु अंदर से बिल्कुल विपरीत बर्ताव करता है । उसका व्यक्त्वि दुहरा है । नागपाल का व्यक्तित्व मेहनती और जिद्दी है, उसने बड़ी मेहनत से फिल्मी दुनिया में अपना स्थान निर्माण किया है । उसके परीवारिक बर्ताव को देखने पर पाठकों के मन में घृणा और क्रोध निर्माण होता है । 'नागपाल' यह प्रात्र बीच की दरार में नारी-शोषक की भूमिका निभाता है, किंतु नारी का शोषण करते वक्त नागपाल ने काफ़ी सावधानी बरती है क्योंकि समाज में तो उसने सज्जन, सुसंस्कृत आदमी की लबादा ओढ रखा है । नागपाल यह पात्र नारी को केवल उपभोग की वस्तु मानता है और पुरुषप्रधान संस्कृति में होनेवाले नारी-शोषण का वह पक्षधर बनता है । यात्रीजी ने नागपाल को नारी शोषकों के प्रतीक के रुप में दिखाया है । यात्रीजी दुनिया के नकाबपोश नारी-शोषकों का पर्दाफाश करने के लिए ही नागपाल का चित्रण करते है ।

पसनेल्टीज पत्रिका के मि. मलिक 'बीच की दरार' उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण पात्र है, जिसके माध्यम से यात्रीजी ने नीना और नागपाल की ऊपरी तौर से सुखी दिखाई देनेवाली गृहस्थी की असलियत पाठकों के सामने लायी है । उसके माध्यम से नीना-नागपाल के जिंदगी की पोल खोल दी है । 'मि. मलिक' इस चरित्र को यात्रीजी ने कमाल के स्थैर्य से निर्माण किया है, वह नीना की व्यथा से न ही व्यथित होता है और न ही नागपाल के प्रति अपना क्रोध व्यक्त करता है । पत्रकार के स्वभाव में जो-जो होना जरुरी हैं वह सब गुणों को लेकर मलिक पात्र इस उपन्यास में अपना अलग स्थान प्राप्त करता है और यहीं पर यात्रीजी सफल हुए दिखाई देते है । यात्रीजी ने 'मि. मलिक' को सामनेवाले व्यक्ति को खुद के बारे में बोलने पर मजबूर करने की कला खुबी से सौंपी है,

जिसके कारण नीना-नागपाल के घरेलु संबंध की सचाई सामने लाने का कार्य बहुत अच्छी तरह चित्रित किया है । मि. मलिक को इस उपन्यास के सुत्रधार के रुप में यात्री पेश करते हैं ।

बढ़ती आबादी के कारण आज के युवक को नौकरी पाना बहुत ही कठीण बात हो गई है । 'सुबह की तलाश' का नायक 'सतीश' के जरीये यात्रीजी इसी सच्चाई पर प्रकाश डालने की कोशिश करतें है । समाज में स्थित उच्चशिक्षित बेरोज़गार युवक का प्रतिनिधित्त्व 'सतीश' करता है । काबिलियत और मेहनत इन गुणों से परिपूर्ण होते हुए भी नौकरी न मिलना और नौकरी न मिलने के कारण युवकों की मानसिकता का बिगड़ जाना आदि का चित्रण सतीश के माध्यम से यात्रीजी सफलतापूर्वक करते है । हालात की थपेड़ों से बच-बचकर जिंदगी व्यतित करनेवाला सतीश समाज की भलाई के लिए अपना भी योगदान हो यह सोचकर अपनी आकांक्षापूर्ति के लिए वह अपना जीवन अंपगो की सेवा करने के लिए समर्पित करते हुए यात्रीजी ने दिखाकर आज के युवकों के सामने एक आदर्श चरित्र को निर्माण किया है । यात्रीजी ने इस उपन्यास में 'बेकारी की समस्या' को उठाने की यह कोशिश है, लेकिन सतीश की प्रमुख समस्या बेकारी यह होते हुए भी उसका समाज कार्य में जुट जाना, वास्तविकता का विपर्यास लगता है ।

प्रस्तुत उपन्यास की बीना को नायिका के रुप में चित्रित किया गया है । बीना ने एम्.ए.बी.एड. तक की शिक्षा हासिल की है और उच्चशिक्षित होने की वजह से उसके विचार आधुनिक है । परंतु असल में बीना पारंपारिक लड़कियों की तरह घर के काम में जुट जाती है । बीना के घर का माहौल शिक्षित और आधुनिक न होने के कारण वह अपने विचारों को व्यक्त करने में असफल दिखाकर यात्रीजी ने समाज में स्थित उच्चशिक्षित किंतु परंपराओं के जकड़ में पीसनेवाली लड़कियों की प्रतिमा चित्रित की है । औरतों को नुमाइश की चीज समझनेवाले समाज के प्रति उसके मन में काफी कड़ावाहट है फिर भी वह अपने विचारो को सतीश के अलावा किसी के भी सामने व्यक्त नहीं करती है । 'बीना' इस चरित्र को यात्रीजी निश्चित दिशा नहीं दे पाये है क्यों कि परंपरागत रीतियों को विरोध करनेवाली 'बीना' स्वयं 'लड़की दिखाने की रस्म' निभाती है ।

उसका सतीश से प्यार करना और फिर भी माँ-बाप द्वारा तय किया हुआ रिश्ता स्वीकार कर लेना इस बात से यह निष्कर्ष निकलता है कि यात्रीजी 'बीना' के चरित्र को ठीक तरह से न्याय नहीं दे सके हैं । पूरे उपन्यास में 'बीना' के सामाजिक विचार कहीं भी नहीं दिखाई देते हैं, फिर भी यात्रीजी ने इस चरित्र को समाजकार्य में समर्पित होते हुए दिखाया है । माना तो 'बीना' यह उपन्यास प्रमुख पात्र है और नहीं भी क्योंकि उसके बर्ताव से उपन्यास के आशय, विषय पर कोई असर नहीं पड़ता है ।

यात्रीजी के उपन्यास के पात्र सामान्य होते हुए भी असामान्य महसूस होते हैं । यात्रीजी पात्रों का प्रयोग सूक्ष्मता से करते है और उनके पात्रों की अपनी एक दृष्टि होती है, जो लेखकद्वारा थोंपी गयी नहीं होती । कम-से-कम पात्रों के सहारे यात्रीजी ने आलोच्य उपन्यासों की रचना की है और फिर भी उपन्यास की कथावस्तू में कोई बाधा नहीं आयी है । से.रा.यात्रीजी के आलोच्य उपन्यास के पात्र मध्यमवर्गीय और उच्चशिक्षित दिखाई देते हैं । यात्रीजी पात्रों की पीड़ा को चेतना के स्तर भर उभरने की कोशिश करते हैं । यात्रीजी के उपन्यास के पात्र दु:खद स्थितियों से डरकर भागनेवाले नहीं है पीड़ादायक स्थितियों का डटकर सामना करनेवाले विवेकी और संयमी आदि गुणों से संपन्न हैं । पात्रों को सजीव, यथार्थ बनाने के लिए उपन्यासकार की कल्पनाशक्ति की मानव मन के सूक्ष्म अध्ययन और उसकी कलात्मक योजना की परीक्षा होती है । उपन्यास में जीवन का यथार्थ चित्रण पात्र-पीरयोजना के माध्यम से करना आसान होता है । पात्र परियोजना उपन्यास का प्राणतत्व है और यात्रीजी ने पात्र परियोजना उपन्यास करते समय समाज में स्थित आम आदमियों के चरित्र को ही अपने उपन्यास का प्रमुख नायक बनाकर बहुत मात्रा में सफलता प्राप्त कर ली है । यात्रीजी ने मनुष्य प्रकृति या स्वभाव के बिभिन्न पक्षों और स्तरों का सूक्ष्म अध्ययन करके और कम-से-कम शब्दों में चित्र उपस्थित करने का कार्य उनके उपन्यास के पात्रों द्वारा किया है ।

यात्रीजी ने आलोच्य उपन्यासों में नारी के अंतर्द्वंद्वों को प्राथमिकता देने के साथ-साथ नारी की उदारता, सहनशीलता, समर्पणशीलता, शाक्तिमत्ता को अध्ययन का विषय बनाया गया है ।

यात्रीजी की दृष्टि से संसार की निम्नवर्ग की स्त्री चाहे वो पतिता ही क्यों न हो यात्री के साहित्यसृजन की नजर से दुनिया के महान से महान पुरुषों से भी अधिक आदरणीय है । नारी के संबंध के अपने विचार को यात्री ने अपने उपन्यासों का केंद्र बनाया है । उनके नारी के विषयक विचार बहुत ही संयमी, स्वच्छ और पारदर्शी हैं । नारी के बहुआयामी व्यक्तित्व को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का यात्रीजी का प्रयास हमेशा रहा है ।

से.रा. यात्रीजी ने अपने उपन्यासों को अलग-अलग परिवेश में ढाला है । 'दराजो में बंद दस्तावेज' इस उपन्यास में करुणा और परेश की असफल प्रेम कहानी का चित्रण करने के लिए उन्होंने मसूरी जैसे पहाड़ी प्रदेश को चुना है । उपन्यास की कथावस्तु की माँग के अनुसार यात्रीजी परिवेश का चयन करते है, जैसे कॉलगर्ल के लिए ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए पर्यटन क्षेत्र से अच्छा मौका नहीं मिल सकता और यहीं वजह है कि यात्रीजी ने 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में मसूरी जैसे पहाड़ी प्रदेश का चित्रण किया है । यात्रीजी वातावरण निर्मिती में कोई खास दिलचस्पी नहीं रखते है, उपन्यास के बाहरी सजावट करने के लिए वो कष्ट नहीं उठाते ब्लकि वे कथावस्तु और समस्या पर ही ज्यादा ध्यान देते है । 'बीच की दरार' में किसी खास प्रदेश का उल्लेख नहीं है क्योंकि यह उपन्यास 'नीनाविला' बंगले के अंदर शुरु और खत्म होता है । नीना की जिंदगी ही चार दीवारों के अंदर दफन हो चुकी है, जैसे पंछी एक बार पिंजड़े में बंद होने के बाद उड़ना भूल जाता है और उड़ने की आकांक्षा भी हो तो उड़ नहीं सकता, ठीक उसी तरह नीना की जिंदगी उस राजमहल जैसे मकान के अंदर मृत प्राय हो चुकी है । 'सुबह की तलाश' में भी किसी खास प्रदेश का चयन नहीं किया है । महानगरीय जीवन की समस्या को चित्रित करने के लिए किसी भी एक शहर का नाम लेना जरुरी नहीं है क्योंकि जो 'सतीश' की बेकारी की समस्या है, वह समस्या हर शहर, महानगर में हर युवक को सता रही है । अर्थात यात्रीजी परिवेश को चुनने के बजाय मानवी जीवन की समस्या को उपन्यास का आत्मा बना देते है । यात्रीजी के आलोच्च उपन्यासों में परिवेश को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया गया है मानो वे परिवेश से ज्यादा विषय और आशय में डूब जाना चाहते है ।

यात्रीजीने मनोरंजन के साथ-साथ समाज में स्थित ज्वालाग्राही समस्याओं को प्रमुखता से मुखरता दी है । उन्होंने समस्या प्रधान उपन्यासों की निर्मिती से समाज को नई दिशा दिखलाने का प्रयास किया है । यात्रीजी के आलोच्य उपन्यास समस्या प्रधान हैं अर्थात लेखक जिस समाज में रहता है उस समाज को अपनी कलाकृती से दूर नहीं रख सकता । परिणामत: समाज में स्थित समस्याएँ उस लेखक के साहित्य का विषय बन जाती हैं, ठीक उसी तरह यात्रीजी भी समाज को खोखला कर देनेवाली कई समस्या को मुखरता देते हैं । चाहे फिर वो समस्या नारी शोषण की हो, बेकारी की हो, दहेज की हो या मानसिक कुंठा की हो । यात्रीजी ने इन अलग-अलग समस्याओं को चित्रित करने के लिए बहुत परिश्रम लिया है । यात्रीजी समस्या का हल नहीं बता देते मगर सच्चाई सामने लाने की कोशिश जरुर करते हैं । साठोत्तरी उपन्यास साहित्य में अनेक सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है । उपन्यास विशिष्ट समुह पर अथवा जिस सामाजिक स्तर पर घटित होता है उस स्तर का सूक्ष्म अध्ययन करके अत्यंत प्रामाणिकता से साहित्य निर्मिती का निर्माण हो रहा है और इसी परंपरा के पथ मर चलनेवालों में यात्रीजी भी शामिल है । यात्रीजी समस्या को तीव्र रुप में तथा अति वास्तववादी बनाने के बजाय यथार्थ रुप में चित्रित करने की कोशिश करते है ।

से.रा. यात्रीजी ने आलोच्य उपन्यासों में नारी-शोषण मानसिक कुंठा, कॉलगर्ल की समस्या, आर्थिक दुर्बलता, पति-पत्नी तनाव, बेकारी, देहज की समस्या, विवाह की समस्या, आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है । इन समस्याओं का चित्रण करते वक्त यात्रीजी ने कहीं भी अतिवास्तववाद तथा बीभत्सता, अश्लिलता का सहारा नहीं लिया है । समस्याओं का चित्रण करते वक्त यात्रीजी मानवी दु:खों की जड़ को खोजने का अच्छा प्रयास करते हैं । नारी शोषण के परिणाम स्वरुप नारी में मानसिक कुंठा निर्माण होती है । घुटन या कुंठा से मानवी जीवन का सारा चैन खो जाता है क्योंकि कुंठा एक अभिशाप है । बाह्य दबाव या शोषण से कुंठा की निर्मिती हो जाती है । यात्रीजी ने 'दराजों में बंद दस्तावेज' और 'बीच की दरार' इन उपन्यासों की नायिकाएँ 'करुणा' और 'नीना' के जीवन की कुंठा को चित्रित किया है । नीना और करुणा की व्यथा एक ही है, दोनों ही शोषण की शिकार हो गयी है । जिस उम्र में लड़कियां खेलकुद सकती है, सुनहरे सपने देखती है,

उस उम्र में 'करुणा' को कॉलगर्ल जैसा घिनौना व्यवसाय करने पर मजबूर किया जाता है । करुणा आम लड़कियों की जिंदगी जीना चाहती तो है किंतु उसकी मुक्ति के सारे दरवाजें उसके लिए हमेशा बंद हो गये है और इसी घुटन में करुणा जी रही है । शादी का अर्थ भी न समझने की उम्र में विठोबा से नीना की शादी हुई । 'नीना' की शादी और उसके बाद विठोबा के अत्याचार से तंग आयी नीना विठोबा के मृत्यू की पश्चात भी 'नागपाल' जैसे वहशी आदमी के साथ जिंदगी एक मुर्दे की तरह जी रही है । केवल बच्चों को जन्म देनेवाली मादा और एक प्रसिद्ध, सफल सिने-निर्देशक की पत्नी बन कर जिंदगी बिताना नीना को मंजूर नहीं है, फिर भी इससे छुटकारा न होन के कारण उसकी मानसिक कुंठा अत्यंत कारुण्यपूर्ण हो गयी है । नीना वैधव्य की समस्या को हल करने के लिए नागपाल से पुनर्विवाह करती है परंतु उसकी समस्याएँ कम होने की अपेक्षा और भी बढ़ जाती है । वह केवल बच्चो को पैदा करनेवाली 'मादा' बन जाती है । नागपाल का पुरुषी अहं नीना के करियर को पूर्ण रुप में दबा देता है । जिससे नीना प्रख्यात अभिनेत्री का अपना रुप छोडकर केवल एक गृहस्थ नारी बन जाती है । नीना की यह वेदना अत्यंत प्रभावशाली ढंग से यात्रीने प्रस्तुत की है । यात्रीजी ने 'करुणा' और 'नीना' की मानसिक कुंठा का चित्रण बड़े सामर्थ्य के साथ किया है । नीना का शराब पीना, करुणा का विपरीत बर्ताव करना ऐसे कई सूचक यंत्रणों से यात्रीजी मानसिक कुंठा इस समस्या को पाठकों के संमुख लाने का प्रयास करते है ।

गरीब, पीड़ित, दुर्बल नारियाँ अपने जिस्म का सौदा करके उदरपूर्ति किया करती है मगर उसके पीछे कोई-न-कोई महत्त्वपूर्ण कारण होता है । कोई भी नारी अपनी इच्छा से कॉलगर्ल या वेश्या नहीं बनती इसपर यात्रीजीने प्रकाश डाला है । 'करुणा' के पात्र को निर्माण करके यात्रीजी ने कॉलगर्ल जैसी महत्त्वपूर्ण समस्या को खोजने का अच्छा प्रयास किया है । आज सभ्य, प्रतिष्ठित, पूँजीपति सभ्यता के नगरों और महानगरों में कॉलगर्ल का बाजार गर्म है । पाश्चात्य सभ्यता पर आधारित बड़े-बड़े अमीरों का यह सेक्स पूर्ति का माध्यम बन बैठा है । यात्रीजी ने इस भयावह समस्या को दराजों में बंद दस्तावेज के माध्यम से उभारा है । करुणा अपनी मर्जी से इस व्यवसाय में नहीं आयी है बल्कि यह घिनौना

व्यवसाय उसका पालन-पोषण करनेवाली मौसी ने उसपर लादा है । मौसी ने पैसों की लालच में जबरदस्ती से करुणा को इस दलदल में ढकेला है । कॉलगर्ल की समस्या वास्तव है जिसका हल कोसों दूर है । करुणा यहाँ समाज व्यवस्था की शिकार बनी नारी है । एक नारी दूसरी नारी को उदरपूर्ति का साधन बनाकर उसके जिस्मका सौदा करने को कैसे बाध्य करती है, यह यथार्थ यहाँ प्रस्तुत किया है ।

आज़ादी के पश्चात नारी को वैधानिक समानाधिकार मिले परिणाम स्वरुप सभी स्तरों पर की नारियाँ को परिवर्तन की पृष्ठभूमि मिले परंतु भारत की औसंत नारी आज भी पुरुषप्रधमन संस्कृति के शोषण की शिकार बनी हुई है । सामाजिक समस्याओं में 'नारी-शोषण' एक पुरानी और परंपरागत लेकिन महत्त्वपूर्ण समस्या है । यात्रीजी अत्यंत संवेदनशील और भावुक होने के कारण उन्होंने इस समस्या को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है । 'दराजों में बंद दस्तावेज' और 'बीच की दरार' इन उपन्यासों में यात्रीजी ने नारी-शोषण की समस्या को बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है । 'बीच की दरार' उपन्यास की नायिका नीना पुरुषप्रधान संस्कृतिद्वारा होनेवाले शोषण की शिकार हो चुकी है । नीना की जिंदगी कठपुतली जैसी बन गई । पुरुष समाज ने अपने अंहभाव से नारी को दासी बना रखा है । इसी समाजद्बारा नारी को महान बनाकर पूजा जाता है किंतु वास्तव में उसपर क्रुर, अन्याय, अत्याचार किये जाते है । नारी पर होनेवाले अत्याचार का प्रतीक 'नीना' के चरित्र से यात्रीजी ने प्रस्तुत किया है ।

आर्थिक उदारीकरण, मुक्त अर्थव्यवस्था, जागतिकिकरण आदि से देश के विकास की गति तेजी से बढ़ रही है, तो दूसरी तरफ समाज का उपेक्षित वर्ग आर्थिक दुर्बलता के कीचड़ में धँसता जा रहा है । इस समस्या पर से.रा.यात्रीजीने 'दराजो में बंद दस्तावेज' उपन्यास में चितंन करके आर्थिक दुर्बलता को पाटने के लिए करुणा को जिस्म का सौदा कैसे करना पड़ता है इस पर गंभीरता के साथ सूचित किया है । 'सुबह की तलाश' का नायक भी आर्थिक स्थिरता के लिए दर-दर भटकने के बाद अपने आप को विशिष्ट ढाँचे में बदल देता है । यात्रीजी के आलोच्च उपन्यासों में आर्थिक समस्या को स्पष्ट रुप से चित्रित नहीं किया है मगर बड़ी सावधानी से इस समस्या को सूचित किया है ।

नारी मुक्ति आंदोलन, नारी स्वतंत्रता की माँग के कारण नारियों को नयी चेतना मिल रही है, अपना स्वत्व खोजने के लिए आज की नारी प्रयत्नशील है । इस स्थिति में परंपरागत पुरुषप्रधान संस्कृति के पायिक 'पुरुष' नारी के प्रति अपनी पुरानी, परंपरागत दृष्टि रखते हैं । इसके परिणाम स्वरुप दांपत्य जीवन में टकराव की स्थितियाँ उत्पन्न हो रही है । 'बीच की दरार' में नीना और नागपाल के पारीवारिक संबंध ऊपरी तौर पर प्यार भरे दिखाई देते है किंतु नागपाल और नीना मानसिक स्तर पर पूरी तरह टूट चुके है क्योंकि घर-संसार के बारे में नीना और नागपाल के बिचार अलग है । पत्नी सिर्फ पती को शरीर सुख देनेवाली, पती के अच्छे-बूरे बर्ताब को मूक बनकर सहनेवाली, उसके अत्याचार के खिलाफ एक लब्ज भी न बोलनेवाली 'मादा' ऐसी नागपाल की धारणा होने के कारण उन दोनों का संसार एक होते हुए भी एक नहीं है, ऐसा यात्रीजी ने चित्रित किया है ।

जिससे सारी दुनिया त्रस्त है, वह भयावह समस्या है 'बेकारी' और बेकारी की दीमक ने आज के युवक को खोकला कर दिया है । बेकारी एक बड़ी बीमारी है जो देश के विकास के जड़मूल को कुतरकर खा जाती है । यात्रीजी ने बेकारी की इस भयानक समस्या को चित्रित करने के लिए 'सुबह की तलाश' का का नायक 'सतीश' को प्रतिनिधित्व दिया है । बेरोज़गारी की समस्या चित्रित करने के उद्देश्य से यात्रीजी ने यह उपन्यास लिखा है मगर यात्रीजी इसमें सफल नहीं हुए । उपन्यास में चित्रित मूल विषय से प्रामाणिक रहने का प्रयास यात्रीजी की तरफ से नहीं हुआ अर्थात 'सुबह की तलाश' इस उपन्यास में अत्यंत उपरी तौर पर इस समस्या का चित्रण हुआ है ।

बिबाह एक ऐसा संस्कार है, जिसमें दो मनों का मिलन होता है किंतु आज के जमाने में विबाह जैसे मंगलकार्य में 'दहेज' के नाम से व्यापार शुरु हुआ है । रिश्तों, नातों का आधार आज आर्थिक हो चुका है । आज मानबता का कोई मायना नहीं रहा है । 'सुबह की तलाश' में राकेश की बहन के लिए उनके ही पहचान के लड़के का रिश्ता आया था । निकट के रिश्तेदार होने के कारण वे खुलकर दहेज नहीं माँग सकते थे इसीलिए उन्होंने बीना पर चरित्रहीन की तोहमत लगाकर तय किया हुआ रिश्ता तोड़ दिया, इस उदाहरण से यात्रीजी

ने 'आज रिश्तों-नातों का आधार आर्थिक हो गया है,' इससे पाठकों को अवगत कराया है। बेटा-बेटी के विवाह योग्य हो जाने पर उनके हाथ पीले कर देना भारतीय संस्कृति में माता-पिता का धर्म माना जाता है। विवाह तय करते समय माता-पिता लड़की के पसंद का खयाल नहीं करते। भविष्य में ऐसे दांपत्यजीवन में विसंवाद हो कर विवाह संस्था टूट सकती है। आज की युवतियाँ माता-पिता के इस दृष्टिकोन पर नाराजी व्यक्त कर सकती है किंतु क्रांती नहीं कर सकती और इसी समस्या का शिकार बनी है - 'सुबह की तलाश' की नायिका बीना। बीना का तय किया हुआ रिश्ता संशय के कारण टूट जाता है। बीना उच्चशिक्षित है किंतु शादी के मामले में उसकी राय नहीं ली जाती। यात्रीजी ने इस समस्या को विस्तार से चित्रित करने की अपेक्षा केवल संकेतोंसे काम निभाया है।

यात्रीजीने उपन्यास के पात्र और परिवेश अनुरुप भाषा तथा शैलीयों का प्रयोग किया है। उनकी भाषा-शैली और शिल्प सरल एवं बोधगम्य है। पात्रों के परिवेश के और तत्कालीन स्थिति के मुताबिक यात्रीजी ने भाषा-शैली को उठाया है। यात्रीजी को आत्मकथनात्मक शैली अधिक प्रिय है, उनके अधिक तर उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग हुआ है। यात्रीजी की भाषा में ग्रामीण शब्दों तथा अपशब्दों का भी प्रयोग हुआ है, जिससे भाषा पात्रानुकूल और यथार्थ बन चुकी है। 'कुदरती सुंदरता' 'शिकारी मनोवृत्ति' आदि भाषागत प्रयोगों के माध्यम से यात्रीजी ने नये-नये विशेषणों की तलाश की है। मुहावरों, कहावतों के प्रयोग से भाषा जानदार बनी है। यात्रीजी द्वारा प्रयुक्त सुक्तियाँ जीवन की सत्यानुभूति, जीवनानुभवों को गहराई, गहन चिंतन, अनुभवों की सूक्ष्मता को साकार करती है। अंग्रेजी वाक्य, मिश्र वाक्य आदि के प्रयोग से भाषा को पात्रानुकूल बनाया है। यात्रीजी ने 'बीच की दरार' यह साक्षात्कार पद्धति में लिखा उपन्यास होने पर उसमें चेतनाप्रवाह शैली द्वारा नीना के आंतरिक यथार्थ का सफल चित्रण किया है। 'दराजों में बंद दस्तावेज' में डायरी शैली का प्रयोग करके उपन्यास को वास्तव रुप में उभारने की कोशिश की है। यात्रीजी ने विविध शैलियों का सफल चित्रण अपने आलोच्च उपन्यासों में किया है।

से.रा.यात्रीजी के 'दराजों में बंद दस्तावेज,' 'बीच की दरार' 'सुबह की तलाश' आदि आलोच्च उपन्यासों को पढ़ने पर हमें ज्ञात होता है कि यात्रीजी का उद्देश्य सामाजिक समस्या को उजागर करना यहीं नहीं है तो यात्रीजी इन तीन उपन्यासों के जरीये समाज को जिन समस्याओं ने घेरा है उन परिस्थितियों पर आज सभी लोगों को विचार करने को बाध्य करना चाहते है। परंपरागत जीवन शैली को बदलना चाहिए इसी उद्देश्य से उपन्यास का निर्माण करते हुए दिखाई देते हैं। 'दराजो में बंद दस्तावेज' के माध्यम से 'करुणा' जैसी कोई भी लड़की कॉलगर्ल के रास्ते पर न जाने पाये इस उद्देश्य को पाठकों के मन पर बिंबित करने में से.रा.यात्रीजी सफल हो जाते हैं। 'बीच की दरार' के द्वारा उन्होंने पति-पत्नी के बीच के रिश्ते की असफलता को दिखाकर अप्रत्यक्ष रुप से इन संबंधों को सुधारने की आवश्यकता है, यह विशद किया है। 'सुबह की तलाश' का सतीश के आदर्श समाज सेवक की प्रतिमा प्रस्तुतकरता है। यात्रीजी सामाजिक स्तर पर बदलाव चाहते है।

मानवी जीवन के मूल को खोजकर यात्रीजीने जनजीवन पर गहराई से सोचा है। मनोरंजन के लिए उपन्यास लेखन यह यात्रीजी का पिंड नहीं है, बल्कि संवेदनशील होने के नाते वे समाज के लिए हर आदमी का कर्तव्य क्या हैं उसको अप्रत्यश रुप से अभिव्यक्त करते है। से.रा.यात्रीजी मध्यवर्गीय समाज के दु:खों तथा व्यथाओं को प्रस्तुत करने का प्रमाणिक प्रयास करते हैं। उनके आलोच्च उपन्यास साहित्य की कसौटी पर पूरे उतरते है। एक उपन्यासकार की प्रतिबध्दता को यात्रीजीने निभाया है। समाज प्रबोधन करना, पीडित समाज की पीडा को उभारना, नारी जीवन की दु:खद गाथा को स्पष्ट करना, आदमियों के दोहरे व्यक्तित्व पर खुलकर प्रकाश डालना, समाज जीवन की विसंगतियोंपर खुलकर प्रकाश डालना, मानवी जीवन कें बदलाव पर चिंतन करना आदि अनेक उद्देश्योंकी पूर्ति करनेवाले यात्रीजी के आलोच्च उपन्यास साठोत्तरी कालखंड के उपन्यासों में विशेष योगदान निभाते हैं।

से.रा. यात्री के आलोच्च उपन्यासों को यथासांग पढने पर जो-जो निष्कर्ष हाथ लगे इसे इमानदारी के साथ प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में समकलित करने का प्रयत्न किया है।

संक्षेप में एक कहानीकार और उपन्यासकार के रुप में साठोत्तरी कालखंड में से.रा.यात्री का हिंदी साहित्य में स्थान है। उनके उपन्यासोंमें मध्यवर्ग को उपन्यास का विषय बनाकर मध्यवर्गियोंका टुच्चापन, उनके अभाव, सुख-दु:ख के साथ-साथ मध्यवर्गियोंकी अनेक प्रवृत्तियों का पर्दाफाश किया है।

अपने आसपास घटित समाज जीवन को उन्होंने अपने उपन्यासों के विषय बनाये है। लेखक ने जो अनुभव किया है, जो उनकी संवेदनशीलता की कसौटी पर उतर चुका है, उनके पात्र उन्ही अनुभवों और संवेदनशीलता की पुनरावृत्ति करते है। उनके आलोच्च उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय मानसिकता इस वर्ग के लोगों की संस्कारजन्य प्रवृत्तियाँ आदि को लेखक ने गहराईसे प्रस्तुत किया है। उनकी मध्यवर्गीय पीडाचेतना के स्तर पर उभरी हुओ दिखाई देती है। उनके आलोच्च उपन्यास मानवी जीवन के सामाजिक परिवेश को अधिक सुस्पष्ट करते हैं।

यात्रीजी के पात्र आपत्तियों से भागने की अपेक्षा संघर्ष को पसंद करते है। यात्री के पात्र क्रांति के लिए मन की मानासिकता तैयार करते हैं परंतु बाहय दबाव के डर से जीवन से समझौता करते है। नीना और करुणा इसके अच्छे उदाहरण है। यात्रीजीने मध्यवर्गीय आस्तिव बोध का भी परिचय करा दिया है। दायित्व-बोध का भी परिचय लेखक आलोच्च उपन्यासोंद्वारा हमें करा देते है। उनके उपन्यासों के पात्र निराशा की अपेक्षा जीने की ललक से ओतप्रोत लगते है। ये पात्र अपनी विवशताओं को छिपाते हैं। वे सीधा संघर्ष नहीं करते। इन विवशताओं को अपनी मजबूरी समझकर वे बर्दाश्त करते रहने है। द्वंद्व की अपेक्षा यात्रीजी के आलोच्च उपन्यास के पात्र सपाट जिंदगी जीना पसंद करते है। इसीलिए यात्रीजी को आलोच्च उपन्यासों की शैली भी सपाट बनायी बन बैठी है। 'करुणा' जैसे उनके पात्रों के हिनत्व-बोध उभरता है। ये पात्र छोटी-छोटी खुशियों में अपने जीवन को सार्थक मानते हैं। यात्रीजी की नायिकाओं पर शरतचंद्र का प्रभाव लक्षित होता है। उनके उपन्यासों की नारियाँ लेने की अपेक्षा देना अधिक चाहती है, वे आत्मकेंद्रित नहीं लगती। उनके पात्र प्रतिदिन संघर्षमयी जीवन यापन करते है। अर्थात आलोच्च उपन्यासो में यात्रीने मध्यवर्गीय समाज के सुख-दु:ख का लेखाजोखा प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1) डॉ.बेचन-आधुनिक हिंदी उपन्यास और विकास-सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली. प्र. सं. 1965.

2) डॉ. धुमाळ वाय.बी. साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तीमूलक, तुलनात्मक अध्ययन अन्नपुर्णा प्रकाशन कानपुर प्रथम संस्करण 1997

3) डॉ. दुबे तहसिलदार - स्वांतत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में शिल्पविधि का विकास नटराज पब्लिशिंग हाऊस, हरियाणा. प्रथम संस्करण 1983.

4) डॉ. गुलाबराय - सिध्दान्त और अध्ययन - प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली. प्रथम संस्करण 1951.

5) डॉ. गुप्त शांतिस्वरुप - उपन्यास स्वरुप, संरचना तथा शिल्प अलंकार प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1980.

6) डॉ.हिरे. एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री व्यक्तित्त्व एव्ं कृतित्त्व -अन्नपुर्णा प्रकाशन कानपुर प्र.सं. 1993.

7) डॉ. जैन सुरेशकुमार - हिंदी और मराठी के रेखाचित्रों का तुलनात्मक अध्ययन अन्नपुर्णा प्रकाशन, कानपुर. प्रथंम संस्करण. 1985.

8) कालिया रवींद्र - सृजन के सहयात्री - किताबहार प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 1996

9) डॉ. लोढा महावीरमल - हिंदी उपन्यासें का शास्त्रीय विवचेन - रोजनलाल जैन प्रकाशक जयपुर, प्र.सं. 1987.

10) डॉ. मानधाने धनराज हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास ग्रंथम, रायबाग,कानपुर. प्रथम सं. 1971.

11) डॉ. मिश्र दुर्गाशंकर - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - हिंदी साहित्य भांडार, लखनऊ. प्र.सं.1976

12) प्रा. पाण्डेय सतीश -कथाशिल्पि देवेश ठाकूर - अरविंद प्रकाशन,मुंबई प्र.संस्करण 1986 पृष्ठ-57.

13) प्रेमचंद - कुछ विचार - सरस्वती प्रेस, बनारस - चतुर्थ सं. 1949.

14) प्रेमचंद - साहित्य का उद्देश्य - हंस प्रकाशन, इलाहाबाद - प्र. सं. 1967.

15) डॉ. सुरेश सिन्हा - हिंदी उपन्यास - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद द्वितीय संस्करण 1972

16) डॉ. श्याम सुंदरदास - इंडियन प्रेस लि. प्रयाग नववाँ संस्करण संवत2006.

17) शुक्ल बैजनाथ प्रसाद -भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना प्रेस प्रकाशन मंदिर, दिल्ली. प्र. सं. 1977.

18) डॉ. त्रिभुवन सिंह - हिंदी उपन्यास - शिल्प और प्रयोग-हिंदी प्रचारक, संस्थान, वाराणसी दिल्ली प. सं.1980.

19) साप्ताहिक पोलीस टाईम्स अनंत जगदीश अंक 30

सरनाईक (प्रकाशक)

सकाळ प्रेस (लि.)

एम.आय.डी.सी. कोल्हापर

20) डॉ. टंडन प्रतापनारायन - हिंदी उपन्यास कला - हिंदी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, प्र.सं. 1967.

21) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, (उ.प्र.) प्रथम संस्करण 1969.

22) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978.

23) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1994.

24) यात्री से.रा. - लौटते हुए - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1974 पृ.6

25) यात्री से.रा. - अनजान राहों का सफर - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1980 पृ.13

डॉ.बेचन-आधुनिक हिंदी उपन्यास और विकास-सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली. प्र. सं. 1965.

26) यात्री से.रा. - कई अँधेरों के पार- राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1981 पृ.22

27) डॉ. झाल्टे दंगल - उपन्यास समिक्षा के नये प्रतिमान-वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.सं.1987.